इकाई 1: परिवार

चित्र और बातचीत

शिक्षण-संकेत – छोटे समूह में बैठकर चित्र को देखिए और आप जो देख रहे हैं, अपने मित्रों के साथ साझा कीजिए। ये सारे लोग यहाँ क्यों आए होंगे? यह जगह उन्होंने क्यों चुनी होगी? आप कहाँ जाना पसंद करेंगे? किनके साथ जाना चाहते हैं? चित्र में एक बच्ची क्यों रो रही है? क्या कोई उसकी मदद कर रहा है? कुल कितने परिवार इस जगह पर आए हैं? यह सप्ताह का कौन-सा दिन हो सकता है? शाम होते-होते इन सभी लोगों की गतिविधियों में क्या-क्या बदलाव आपको दिखाई देंगे? शिक्षक इन सभी प्रश्नों का उपयोग कर बच्चों के साथ विस्तृत चर्चा करें। बच्चों को अपनी भाषा में मन की बात कहने के लिए प्रोत्साहित कीजिए एवं उपयुक्त अवसर प्रदान कीजिए।

1

सुनें कहानी!

नीमा की दादी

नीमा दोपहर में दो बजे स्कूल से लौटती है। इस समय घर पर सिर्फ़ दादी होती हैं। वे कहीं नहीं आती-जाती हैं।

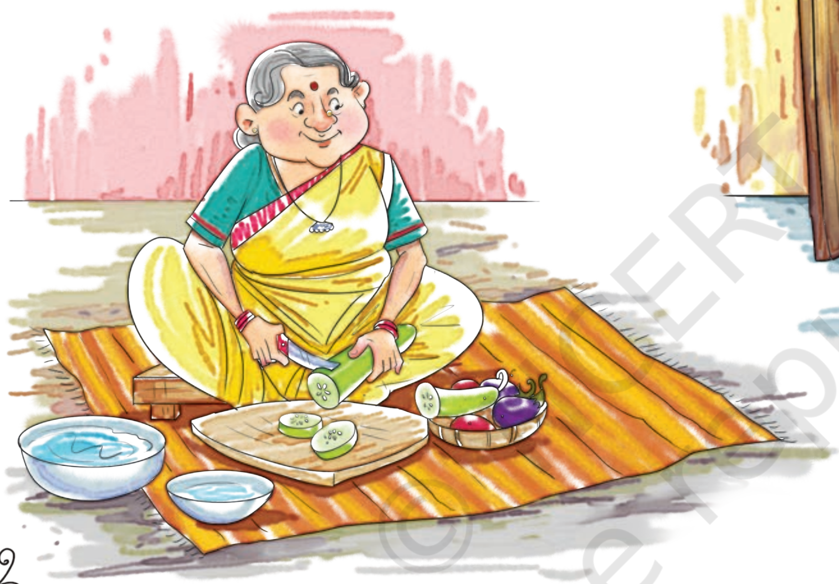

कभी बैठे-बैठे सब्ज़ी काट रही होती हैं।

उनके घुटनों में दर्द रहता है। इसलिए कभी वे अपने घुटनों में तेल मल रही होती हैं। उन्हें नीमा का बहुत इंतज़ार होता है।

© NCERT not to be republished

नीमा रोज़ खाना खाते-खाते स्कूल की बातें सुनाती है। दादी भी उससे खूब बातें करती हैं। शाम को नीमा खेलने जाती है। एक दिन नीमा खेलने के लिए जाने लगी तो दादी बोलीं, "नीमा, थोड़ी देर बैठ जा।"

"क्यों", नीमा पलटकर बोली।

"मेरा समय नहीं कटता", दादी बोलीं।

नीमा रुकी। फिर दौड़कर दादी की चप्पलें ले आई और बोली, "दादी आप भी मेरे साथ खेलने चलिए। खेलने में समय बहुत जल्दी कटता है। मैं पाँच बजे खेलने जाती हूँ पर दस मिनट में ही छह बज जाते हैं।"

दादी ज़ोर से हँसी। फिर वे दोनों खेल के मैदान की ओर चल पड़े।

— शशि सबलोक

© NCERT not to be republished

बातचीत के लिए

1. नीमा की दादी घर पर ही क्यों रहती हैं?
2. मैदान में जाकर दादी ने क्या किया होगा?
3. नीमा कहती है, "मैं पाँच बजे खेलने जाती हूँ पर दस मिनट में ही छह बज जाते हैं।" क्या आपके साथ भी ऐसा होता है?
4. आप स्कूल से घर जाकर अपना समय कैसे बिताते हैं?

नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

1. इस कहानी में कौन-कौन हैं?

   इस कहानी में .... और .... हैं।

2. नीमा स्कूल की बातें अपनी दादी को बताती है। आप स्कूल की बातें किसे बताते हैं?

   मैं अपनी स्कूल की बातें .... को बताती हूँ / बताता हूँ।

3. इस कहानी में नीमा और दादी हैं। 'न' और 'द' से शुरू होने वाले कुछ शब्दों की सूची बनाइए–

'न' वाले शब्द	'द' वाले शब्द
....	....
....	....
....	....

शिक्षण-संकेत – बच्चे 'दी', 'दे', 'दो', 'नी', 'ने' आदि से शुरू होने वाले अपनी भाषा के शब्द भी बता सकते हैं। उन्हें स्वीकार कीजिए और बोर्ड पर लिखिए।

© NCERT not to be republished

शब्दों का खेल

1. नीचे कुछ वर्ण और कुछ मात्राएँ दी गई हैं। इन्हें जोड़कर अपने शब्द बनाइए और अपनी कॉपी में लिखिए –

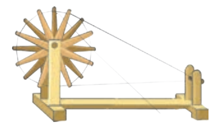

ल	ज	ब	प	ा	आ
र	म	स	घ	ि	इ
त	ख	च	न	ी	ई

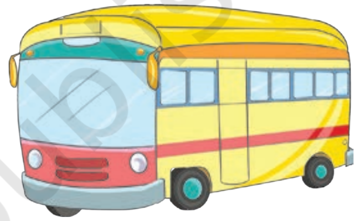

2. कुछ अक्षर छूट गए हैं। उन्हें लिखिए –

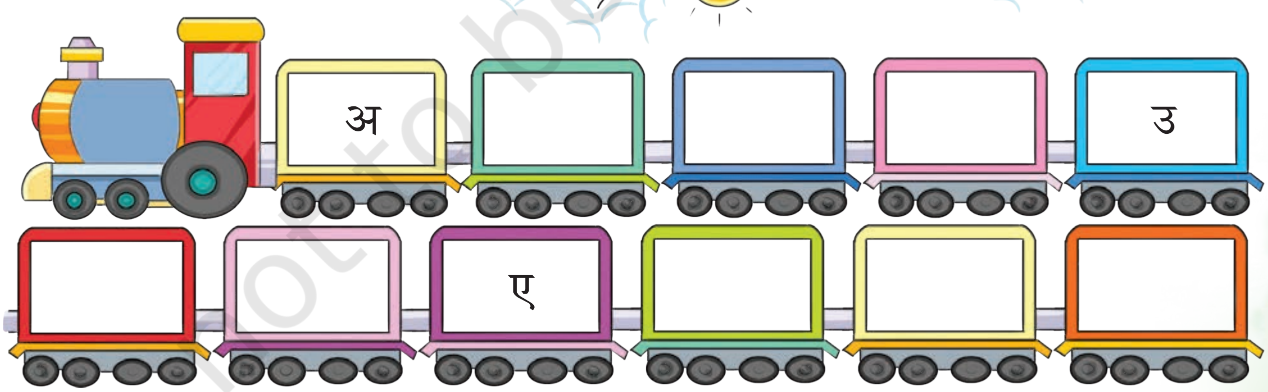

शिक्षण-संकेत – शब्दों का खेल 1 – यह कार्य बच्चों को छोटे समूह में मिलकर करने को कहिए। इसी तरह से सभी वर्णों और मात्राओं की पहेलियाँ बच्चों को नियमित रूप से करने के लिए दीजिए।

© NCERT not to be republished

3. कहानी में 'इंतज़ार' शब्द आया है।
अक्षर के ऊपर लगने वाली बिंदी को अनुस्वार कहते हैं। 'इतज़ार' में जैसे ही 'इ' के ऊपर बिंदी लगाई 'इंतज़ार' हो गया। आइए, ऐसे ही कुछ अन्य शब्दों को देखते हैं –

अक्षर समूह	अनुस्वार लगाने पर बना शब्द	चित्र
शख	शंख	
पतग	पतंग	
बदर	....	
मदिर	....	
अगूर	....	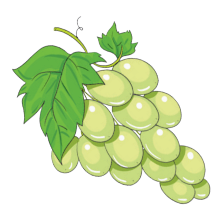

© NCERT not to be republished

2

आनंदमयी कविता

0222CH02

घर

पापा, क्यों अच्छा लगता है
अपना प्यारा-प्यारा घर?
घूम-घाम लें, खेल-खाल लें
नहीं भूलता लेकिन घर।

नहीं आपको लगता पापा
है माँ की गोदी-सा घर।
प्यारी-प्यारी ममतावाला
सुंदर-सुंदर न्यारा घर।

थककर जब वापस आते हैं
कैसे बिछ-बिछ जाता घर।
खिला-पिला आराम दिलाकर
नई ताज़गी देता घर।

— दिविक रमेश

© NCERT not to be republished

बातचीत के लिए

1. आपको अपने घर में सबसे अधिक क्या अच्छा लगता है और क्यों?
2. आपको कब-कब घर की याद आती है?
3. घर को माँ की गोदी-सा क्यों कहा गया है?
4. कोई ऐसी घटना सुनाइए जब पूरे परिवार ने साथ मिलकर घर का कोई काम किया हो।

खोजें-जानें

1. 'घर' कविता अपने परिवार के किसी सदस्य को सुनाइए। घर या परिवार पर उनसे कोई अन्य कविता या कहानी सुनाने के लिए कहिए।
2. अपने परिवार के लोगों से बात करके पता कीजिए और लिखिए –

परिवार के लोग	आप किस नाम से बुलाते हैं?
आपकी माँ की बहन	
आपकी माँ के भाई	
आपके पिताजी की बहन	
आपके पिताजी के भाई	

शिक्षण-संकेत – हो सकता है कि सभी बच्चे यह कार्य करके ना ला पाएँ। जो भी बच्चे ला पाएँ, उन्हें उनका कार्य कक्षा में साझा करने को कहिए ताकि सभी बच्चे उसका आनंद ले सकें। बच्चों द्वारा अपनी-अपनी मातृभाषा में लिखे गए शब्दों को स्वीकार कीजिए और कक्षा में बहुभाषिकता की भावना को प्रोत्साहित कीजिए।

© NCERT not to be republished

3

मिलकर पढ़िए

माला की चाँदी की पायल

QRickit
0222CH03

हुश्श्श्!
माला बिल्ली को डराती।

हेएए!
वह अपनी नानी को डराती।

धप्प!
वह अपने छोटे भाई को डराती।

भऊऊ!
वह डाकिए को डराती।

© NCERT not to be republished

एक दिन माला की माँ ने उसे
एक छोटी-सी डिब्बी दी।
“माला, यह तुम्हारे लिए है,”
वे बोलीं।

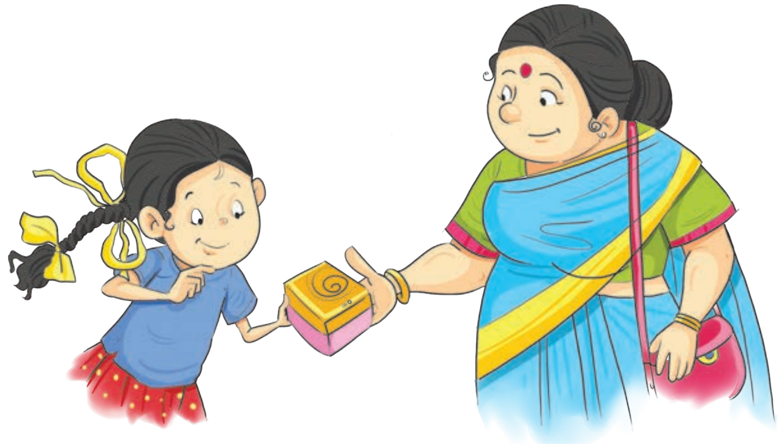

माला ने जल्दी से डिब्बी खोली जिसमें
उसे मिली – नीले कागज़ में लिपटी,
प्यारी-सी चाँदी की पायल!

उन्हें पहनकर, वह पूरे घर में घूमने लगी।
छिक-छिक-छम
छोटे-छोटे घुँघरू झनकते।
छिक-छिक-छम
अब माला जहाँ भी जाती, सब जान जाते।

छिक-छिक-छम
माला की हुश्शश! से पहले बिल्ली
कूद गई।

© NCERT not to be republished

छिक-छिक-छम
माला की हेएए! से पहले नानी
पलट गईं।

छिक-छिक-छम
माला की धप्प! से पहले छोटा भाई
बाहर भाग गया।

छिक-छिक-छम
माला की भऊऊ! से पहले डाकिया
निकल गया।

छिक-छिक-छम
अब माला किसी को डरा नहीं पाती।
तो ऐसे में माला ने क्या किया?
उसने अपनी चाँदी की पायल उतार दी।

— *ऐनी बेसंट*

© NCERT not to be republished

बातचीत के लिए

1. माला सभी को क्यों डराती होगी?
2. माला से सभी क्यों डर जाते होंगे?
3. पायल उतारने के अतिरिक्त माला और क्या कर सकती थी?
4. माँ ने माला को पायल क्यों दी होगी?

लिखिए

1. माला की माँ ने उसे क्या दिया?

माला की माँ ने उसे .... दीं।

2. माला ने पायल क्यों उतार दीं? सही उत्तर चुनिए–

(i) पायल माला को चुभ रही थी।

(ii) पायल से सभी को माला के आने का पता चल जाता था।

(iii) पायल की आवाज़ से सभी को बहुत मज़ा आता था।

(iv) एक पायल खो गई थी और बस एक ही पायल रह गई थी।

3. इन ध्वनियों को सुनिए और उन्हें शब्दों में लिखने का प्रयास कीजिए–

घंटी की ध्वनि

पायल की ध्वनि

शंख की ध्वनि

डमरू की ध्वनि

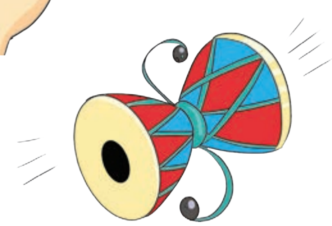

© NCERT not to be republished

4. **माला किस-किस को डरा रही थी?**

....

....

5. **विराम-चिह्न का सही प्रयोग करते हुए नीचे दिए गए वाक्यों को अपनी कॉपी में लिखिए –**

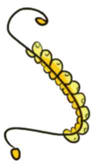

क्या माला को नई पायल मिली

माला पायल पहनकर पूरे घर में घूमने लगी

आओ बूझें पहेली

माला की चाँदी की पायल खो गई है। अक्षरों को जोड़कर 'माला की चाँदी की पायल' बनाइए। रेखा खींचकर शब्दों को जोड़िए –

पा   ला   चाँ   श   ल

आ   ढि   ली   य   खा

मा   डि   ओ

की   दी   बु   की   यी

शिक्षण-संकेत – बच्चों के साथ विराम-चिह्न, जैसे—पूर्ण विराम और प्रश्नवाचक चिह्न पर चर्चा कीजिए।

© NCERT not to be republished

4

आनंदमयी कविता

माँ

माँ तुम कितनी भोली-भाली
कितनी प्यारी-प्यारी हो
दिल से सच्ची मिसरी जैसी
सारे जग से न्यारी हो।

मेरे मन में जोश तुम्हीं से
तुमसे ही प्रकाश
मुझमें साहस तुमसे आता
तुमसे ही विश्वास।

— *अनुभव राज*

© NCERT not to be republished

शब्दों का खेल

चंद्रबिंदु का कमाल

'मा' के ऊपर चंद्रबिंदु लगाने से 'माँ' हो गया। आइए, कुछ और शब्द देखते हैं।

1. नीचे दिए गए चित्रों को देखिए, शब्दों को पढ़िए और उन्हें लिखने का प्रयास कीजिए –

आँख	............आँख............	....
बाँस	....	....
दाँत	....	....
बाँसुरी	....	....
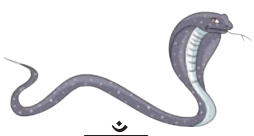 साँप	....	....

2. 'माँ' कविता में से कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। उनका प्रयोग करते हुए अपने परिवार के सदस्यों के लिए दो-चार पंक्तियाँ लिखिए –

भोली-भाली, प्यारी-प्यारी, दिल से सच्ची, जग से न्यारी

शिक्षण-संकेत – बच्चों से बातचीत कीजिए, कुछ उदाहरण उन्हें दीजिए तथा अपने मन से दो-चार पंक्तियाँ लिखने के लिए उन्हें प्रोत्साहित कीजिए।। बच्चे अपने भाई, पिताजी, मित्र आदि के लिए भी ये पंक्तियाँ लिख सकते हैं। बच्चों को अपनी भाषा में मन की बात कहने के लिए प्रोत्साहित कीजिए एवं उपयुक्त अवसर प्रदान कीजिए।

© NCERT not to be republished

5

सुनें कहानी!

थाथू और मैं

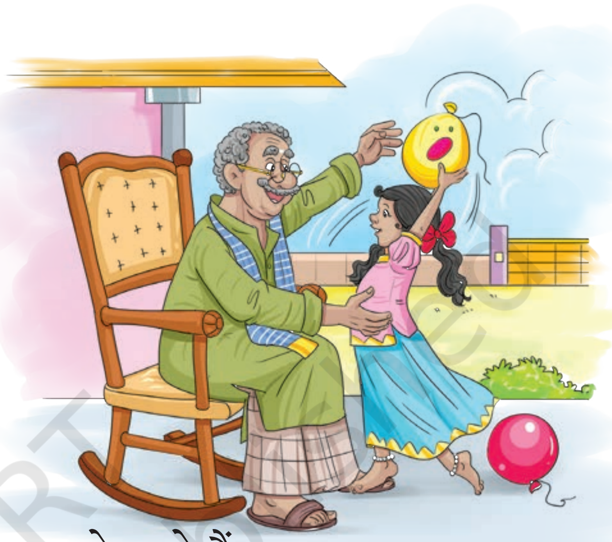

मैं अपने दादाजी के साथ रहती हूँ।
उन्हें मैं 'थाथा' कहती हूँ।
लेकिन जब उन पर बहुत प्यार आता
है, तो मैं उन्हें 'थाथू' बुलाती हूँ।

कभी-कभी थाथू मुझे सिनेमा दिखाने बाहर ले जाते हैं।
मैं उनकी गोदी में बैठकर हॉर्न बजाती हूँ – पॉम! पॉम! रास्ते की सब बकरियाँ
और गायें दूर हट जाती हैं।

“थाथू क्यों न हम चाँद पर चलें?” मैं पूछती हूँ। वे सिर हिलाकर हँस देते हैं। थाथा के दाँत नहीं हैं। जब वे हँसते हैं तो एक गुलाबी-सी दीवार दिखाई देती है...और फिर... एक गुलाबी-सी गुफा।

जब बारिश होती है, तो थाथा खिड़की के बाहर इशारा करते हैं और कहते हैं, “देखो! बरसात हो रही है। चलो! बाहर चलें।”
थाथू और मैं हमेशा कुछ अलग करते हैं। हम समुद्र तट पर जाते हैं। ऊँची-नीची लहरें मेरे चारों तरफ़ उठती-गिरती हैं।

चाँद हमारे साथ-साथ चलता है और हवाएँ सीटी बजाती हैं।
मछलियाँ थाथू और मुझे ढूँढ़ती हुई आती हैं।
मेरी उँगलियाँ कुतरती हैं और मुझे खेलने को बुलाती हैं।

© NCERT not to be republished

हम दौड़ लगाते हैं और
कलाबाज़ियाँ खाते हैं।
जब अँधेरा हो जाता है, तो मैं
थाथू का हाथ पकड़ लेती हूँ।
उनके साथ मैं कूदती-फाँदती
घर आ जाती हूँ। और फिर
थाथू अपनी मनपसंद किताब
पढ़ने बैठ जाते हैं।

"थाथू, यह कोई जादुई किताब है?"
मैं पूछती हूँ। थाथू मुस्कुराते हैं।
"क्या मैं भी जादूगर बनूँगी?" मैं फिर
पूछती हूँ, "आपकी तरह?" वे कहते
हैं, "अब सो जाओ।"
उनकी गोद में सिर रखकर, मैं सो
जाती हूँ।
मुझे अपने थाथू से बेहद प्यार है। मैं
प्रार्थना करती हूँ... कि एक दिन, मैं
भी उनके जैसी बनूँ।

—गीता धर्मराजन

© NCERT not to be republished

बातचीत के लिए

इस कहानी के आधार पर कुछ प्रश्न बनाइए और अपने मित्रों से पूछिए।

शब्दों का खेल

1. सही जगह पर चंद्रबिंदु लगाकर अपनी कॉपी में लिखिए–

(क) ऊची-नीची लहरें मेरे चारों तरफ़ उठती-गिरती हैं।

(ख) "थाथू क्यों न हम चाद पर चलें?"

(ग) मेरी उगलिया कुतरती हैं।

(घ) उनके साथ मैं कूदती-फादती घर आ जाती हूँ।

2. नीचे दिए गए शब्द उलट-पलट हो गए हैं। शब्दों को सही क्रम में लगाकर वाक्य अपनी कॉपी में लिखिए–

(क) साथ के रहती हूँ मैं दादाजी।

(ख) तट समुद्र जाते हम पर हैं।

(ग) हैं थाथू मुस्कुराते।

(घ) हूँ मैं कहती 'थाथा' उन्हें।

© NCERT not to be republished

झटपट कहिए

1. फूफा के फुग्गा पर फिर
मिला फलाहारी
फाफड़ा।

2. भैया भाभी को भायी
भागलपुर की भारी भरकम भेंट।

6

खेल गीत

चींटा

चींटा-चींटा दूध ला,
दूध लाकर दही जमा,
बढ़िया-बढ़िया दही जमा,
खट्टा-मीठा दही जमा।

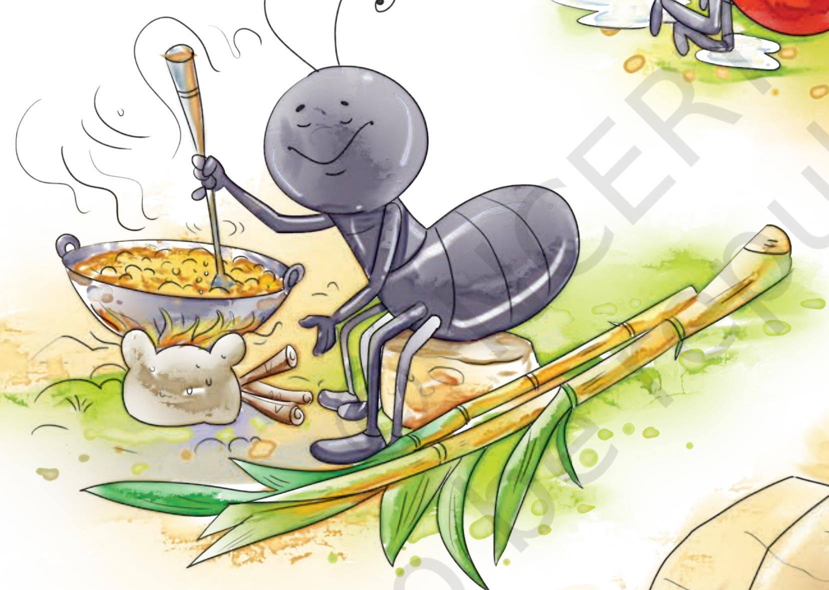

चींटा-चींटा गन्ना ला,
गन्ना लाकर शक्कर बना,
चींटी भूखी आएगी,
झटपट वो खा जाएगी।

चींटा-चींटा शक्कर ला,
शक्कर लाकर शरबत बना,
चींटी प्यासी आएगी,
झटपट वो पी जाएगी।

© NCERT not to be republished

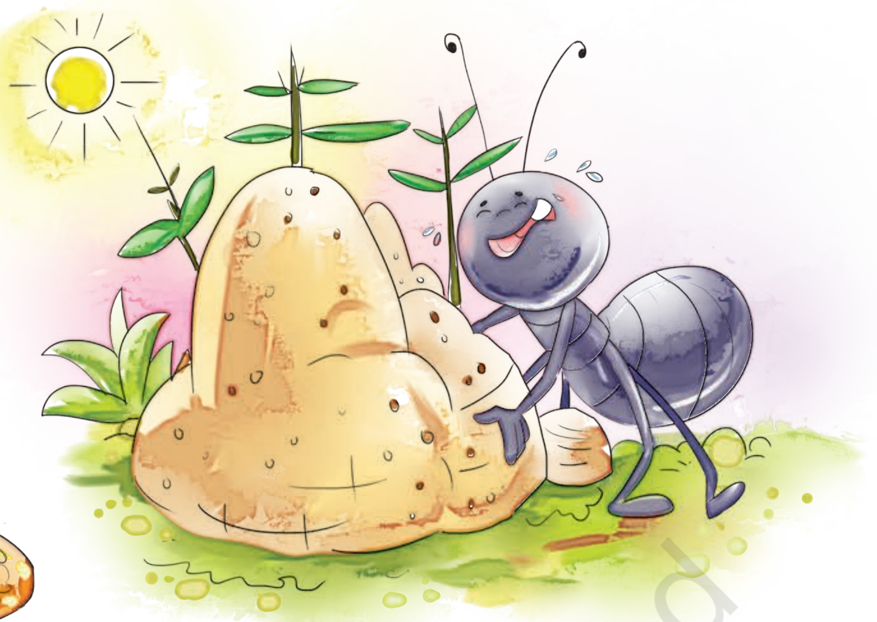

चींटा-चींटा घर बना,
चींटी धूप से आएगी,
देख के खुश हो जाएगी,
झट-से वो रुक जाएगी।

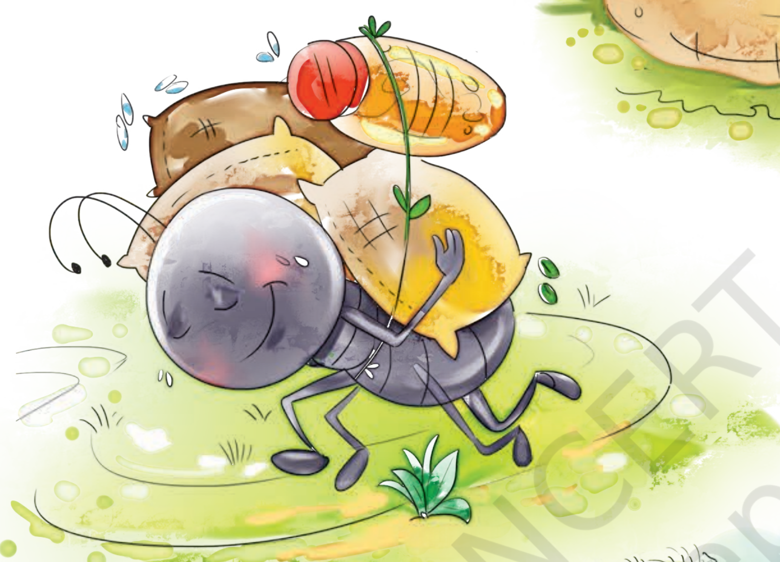

चींटा-चींटा बाज़ार जा,
शक्कर ला, चावल ला,
रोटी ला, पानी ला,
झटपट जा, झटपट आ।

चींटी जब घर आएगी,
देख के खुश हो जाएगी,
तेरे ही गुण गाएगी,
तेरे ही गुण गाएगी।

— साभार, एकलव्य

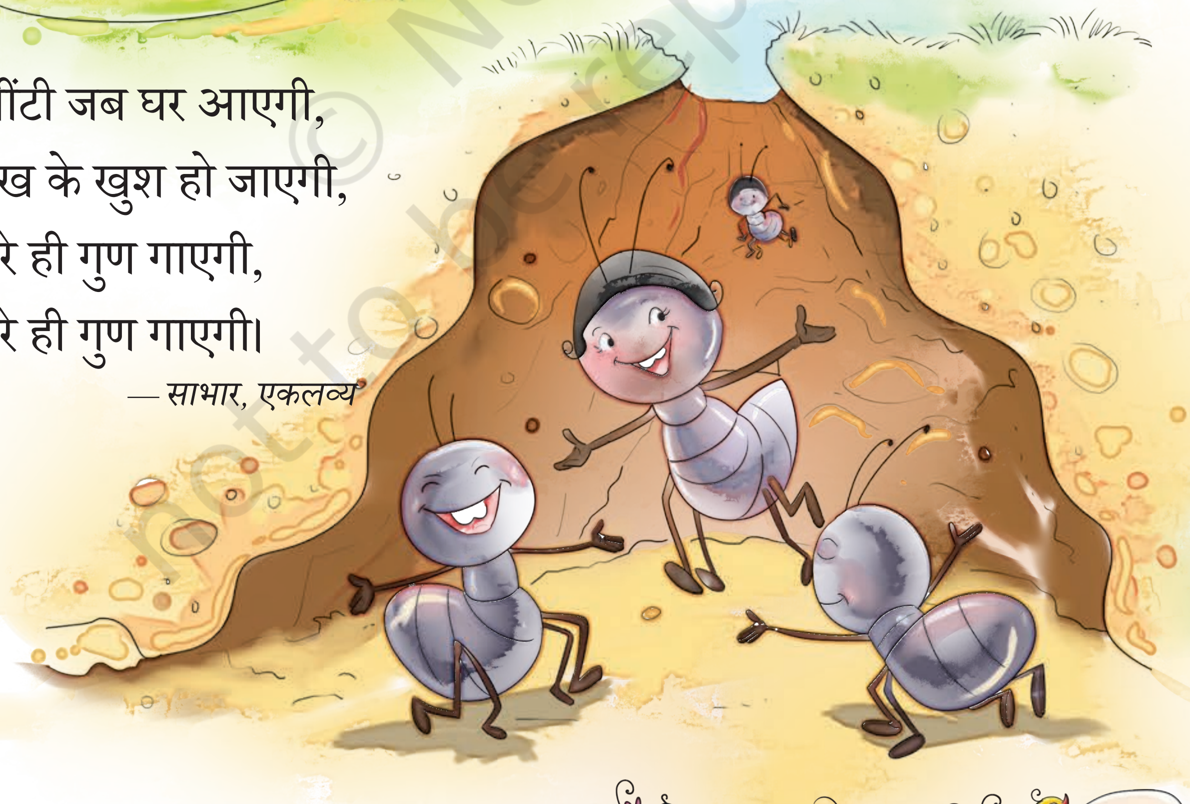

© NCERT not to be republished

चित्रकारी

कविता में चींटे को कुछ काम करने के लिए कहा गया है। वे क्या-क्या काम हैं? चित्रों की सहायता से बताइए और कुछ वाक्य भी लिखिए –

चींटे को दूध लाना है।

आइए, कुछ बनाएँ

परिवार के सदस्य या अपने किसी मित्र के लिए 'धन्यवाद कार्ड' बनाइए। इस धन्यवाद कार्ड पर आप लिख सकते हैं कि आप यह धन्यवाद कार्ड उन्हें क्यों देना चाह रहे हैं।

© NCERT not to be republished

7

खेल गीत

टिल्लू जी

टिल्लू जी स्कूल गए,
बस्ता घर पर भूल गए।

रस्ते भर थे डरे-डरे,
पहुँचे गेट पर अरे अरे।

छुट्टी का नोटिस चिपका,
देख खुशी से फूल गए।

दोनों बाँहें माँ के,
डाल गले में झूल गए।

— नरेश सक्सेना

© NCERT not to be republished

पढ़िए, समझिए और मिलाइए

मित्रों/सहेलियों को देखकर

शिक्षक को देखकर

मैं खुश होता/होती हूँ

माँ को देखकर

.... को देखकर

.... को देखकर

शब्दों का खेल

पढ़िए, समझिए और लिखिए –

अं	गूर	..........अंगूर..........
	जीर	....
	डा	....
	दर	....
	बर	....

© NCERT not to be republished

मिलकर पढ़िए

नटखट दिवाकर

दिवाकर पाँच वर्ष का नटखट लड़का है। सारे दिन ठिठोली करता है और सबको हँसाता है।

उसे गणित सीखने की बहुत लगन है। उसकी बड़ी बहिन मीना उसे संख्याओं को जोड़ना सिखाती है और दिवाकर ध्यान से सीखता है।

दिवाकर कहता है, "एक और दो, तीन!" मीना कहती है, "सपेरा बजाता बीन!" दिवाकर कहता है, "तीन और चार, सात!" मीना कहती है, "लाओ कलम दवात!"

दिवाकर दौड़कर कलम दवात ले आता है और मीना उसे संख्याओं के जोड़ लिखना सिखाती है। $1 + 2 = 3$ $3 + 4 = 7$

आज इतवार का दिन है। दादाजी ने आज कुल्फ़ी बनाने के लिए बहुत सारा दूध मँगाया था। दादी ने सवेरे 9 बजे कढ़ाई में दूध उबालने के लिए रख दिया। दूध को कभी माँ और कभी चाचाजी थोड़ी-थोड़ी देर में चमचे से चलाते रहे।

© NCERT not to be republished

10 बजे तक दूध गाढ़ा हो गया और माँ ने उसे ठंडा होने के लिए रख दिया। दिवाकर बड़ी उत्सुकता से सब देख रहा था।

11 बजे चाचाजी बाज़ार से बरफ़ ले आए और उसे कूटकर मटके में भर दिया। उसमें नमक भी मिला दिया। दादी और माँ ने गाढ़े दूध में चीनी, केसर तथा पिस्ते और बदाम काट कर डाले। फिर कुल्फ़ी के तिकोनों में दूध भरकर मटके में डाल दिए।

तब तक 1 बज गया था। दिवाकर ने दादाजी से पूछा, "दादाजी, कुल्फ़ी कब तक बनेगी?" दादाजी ने कहा, "बेटा, 5 बजे तक बनेगी।"

दिवाकर मीना के साथ खेलने चला गया। कुछ देर बाद दिवाकर ने दादाजी के पास जाकर पूछा, "दादाजी, क्या बजा है?" दादाजी ने अपने कमरे में लगे घंटे की ओर देखकर कहा, "बेटा, 2 बजे हैं।" दिवाकर बेचैनी से 5 बजने की प्रतीक्षा करता रहा।

कुछ समय बाद वह फिर दादाजी के पास गया और पूछा, "दादाजी, अब क्या बजा है?" दादाजी ने फिर घंटे की ओर देखा और बोले, "बेटा, 3 बजे हैं।"

दिवाकर ने भोलेपन से खुश होकर कहा, "दादाजी, 2 और 3, 5 होते हैं— तो अब 5 बज गए। इसलिए कुल्फ़ी खा सकते हैं!"

दादाजी हँस पड़े। उन्हें दिवाकर की कुशाग्र बुद्धि पर बहुत आनंद आया।

—*मालती देवी*

शिक्षण-संकेत – यह पाठ पढ़ने के आनंद को बनाए रखने के उद्देश्य से लगाया गया है।

© NCERT not to be republished